P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों का उद्भव एवं विकास

विकास भड़िया
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
सेठ ने.म.टि.राजकीय पी.जी. महिला महाविद्यालय, झुन्झुनू,
राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय राजनीति के निर्धारक तत्वों में एक महत्वपूर्ण आयाम भारत के राजनीतिक परिदृश्य में दलीय व्यवस्था का स्वरूप है। भारत के बहुभाषीय, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक ढांचे में बहुदलीय शासन व्यवस्था उपस्थित है, जिसमें राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दलों ने अपनी–अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। भारतीय ससंदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की विशिष्ट भूमिका है। भारत एक बहुदलीय व्यवस्था वाला देश है। यहाँ अनेक राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दलों का अस्तित्व रहा है। भारत में राजनीतिक दलों का उद्भव एवं विकास राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में अनेक राष्ट्रवादी स्थानीय संगठन बने होने पर भी स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रभावकारी दलों के संगठन की आवश्यकता महसूस हुई।

मुख्य शब्द : भारतीय राजनीति, राष्ट्रीय दल, राज्यस्तरीय दल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, मुस्लिम लीग, स्वराज पार्टी, साम्यवादी दल, 1967 के चतुर्थ आम चुनाव, जनता पार्टी, राष्ट्रीय मोर्चा, भारतीय जनता पार्टी।

प्रस्तावना

भारत में राजनीतिक दलों की जड़ों को राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है। प्रारम्भिक अवस्था में राज. दल दो कारणों से अस्तित्व में आये थे– सामाजिक सुधार तथा विदेशी शासन का अंत करने के उद्देश्य से। वस्तुतः राजनीतिक दलों का उद्देश्य विदेशी शासन से मुक्ति तथा देश का सर्वांगीण सुधार एवं विकास था। इसी कारण प्रारम्भ में उच्च शिक्षित वर्ग द्वारा ऐसे दल संगठित किये गये जिनमें अन्ततः समाज के सभी वर्ग शामिल हो गये। इस अर्थ में भारत के राजनीतिक दलों को उच्चतम से लेकर निम्नतम वर्ग का सहयोग व समर्थन प्राप्त था। वस्तुतः आरिम्भक दौर में सिर्फ एक दल 'कांग्रेस' अस्तित्व में आया जिसमें से विचारधारा के वैभिन्य के आधार पर अनेक शाखाएं–प्रशाखाएं प्रस्फुटित होती चली गई। समाजवादी दल कांग्रेस से ही निकले जनसंघ के इतिहास पर यदि दृष्टिपात करें तो संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कांग्रेस शासन में भागीदारी भी निभाई थी। 1969 में कांग्रेस का विभाजन हुआ। 1977 में जो जनता पार्टी अस्तित्व में आई उसमें भी कांग्रेस के अंश थे। 1980 में भारतीय जनता पार्टी का निर्माण जनता पार्टी से हुआ। इस प्रकार कांग्रेस से या कांग्रेस के विरोध से राज. दलों का विकास हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारत में दलीय व्यवस्था का अध्ययन करना।
2. भारत में राजनीतिक दलों के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना

अध्ययन विधि

ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक पद्धति।

स्वतंत्र भारत में राज. दलों का विकास

भारत में राजनीतिक दलों की जड़ों को राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है। प्रारम्भिक अवस्था में राज. दल दो कारणों से अस्तित्व में आये थे– सामाजिक सुधार तथा विदेशी शासन का अंत करने के उद्देश्य से। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रकृति राष्ट्रीय आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने वाले एक ऐसे संगठन की थी, जिसने देश में अंग्रेजों के शासन के विरूद्ध संघर्ष कर देश की स्वतंत्रता का लक्ष्य रखा। कालान्तर में विचारधारा की विभिन्नता के आधार पर कांग्रेस से अनेक शाखाएं प्रस्फुटित हुयी। प्रारम्भ में राष्ट्रीय कांग्रेस का स्वरूप एक राजनीतिक दल का नहीं था क्योंकि 1885 में इसका निर्माण एक दबाव गुट के रूप में किया गया था, बाद में इसने एक आंदोलन का रूप धारण कर लिया। स्वतंत्रता के अवसर पर राष्ट्रीय कांग्रेस

के नेता राष्ट्र के नायक के रूप में देखे जाते थे इसका कार्यक्रम और विचारधारा किसी एक वर्ग, क्षेत्र, समुदाय या जाति की पोषक न होकर सर्वांगीण एवं सर्वव्यापी थी। स्वतंत्रता के उपरांत यह एक पूर्ण राज. दल के रूप में उभरा।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय आंदोलनों के समय ब्रिटिश सरकार ने आंदोलनों को कमजोर करने के लिए मुस्लिम साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन दिया गया। परिणामस्वरूप 1906 में मुस्लिम – लीग की स्थापना हुयी। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य मुस्लिम समुदाय के अधिकारों की रक्षा करना एवं ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा का भाव विकसित करना था परंतु बाद में यह द्वि–राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर पाकिस्तान की मांग करने लगी। इसी क्रम में मुस्लिम लीग की प्रतिक्रिया के रूप में सन् 1916 में साम्प्रदायिक संस्था 'हिन्दू महासभा' की स्थापना हुयी, जिसका उद्देश्य पूर्ण स्वराज की प्राप्ति एवं हिन्दूओ के अधिकारों की रक्षा तथा हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करना था। 1922 में राज. दलों के विकास में एक नया अध्याय आरम्भ हो जाता है। महात्मा गांधी चाहते कि भारत शासन अधिनियम 1919 का पूर्ण बहिष्कार किया जायें, लेकिन पं. मोतीलाल नेहरू एवं देशबंधु चितरंजन दास जैसे नेताओं की इच्छा थी कि विधानमण्डलों के भीतर पहुंच कर असहयोग की नीति अपनाई जाए, परिणामस्वरूप 1923 में इन नेताओं द्वारा 'स्वराज पार्टी' की स्थापना की।

इन दलों के अतिरिक्त विभिन्न प्रांतों में स्थानीय राज. दलों का उत्थान हुआ। 1924 में 'साम्यवादी दल' का जन्म हुआ, जो 1943 तक गैर–कानूनी माना जाता था, परंतु इसने 1943 में ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रयत्नों में सहयोग देने का वचन दिया फलतः उसी वर्ष इस दल को भी मान्यता प्राप्त हो गयी। 1934 में कांग्रेस से 'समाजवादी दल' का जन्म हुआ। 1948 तक समाजवादी कांग्रेस के अंतर्गत उसकी एक शाखा के रूप में कार्य करता रहा। 1948 में समाजवादी कांग्रेस से अलग हो गये और एक अलग पार्टी 'सोशलिस्ट पार्टी' का गठन हो गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारम्भिक रूप से गठित कुछ क्षेत्रीय राज. दलों का गठन हुआ जैसे – 1949 में द्रविड़ मुनेत्र कडगम (D.M.K.) 1950 में जयप्रकाश नारायण द्वारा भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना तथा 1951 में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा जनसंघ की स्थापना की गयी। आचार्य कृपलानी द्वारा किसान मजदूर पार्टी (1952 में भारतीय साम्यवादी दल तथा किसान मजदूर पार्टी के विलय के फलस्वरूप प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) का जन्म हुआ) 1959 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रेरणा से स्वतंत्र पार्टी की स्थापना हुयी।

1967 के चतुर्थ आम चुनावों से पूर्व कांग्रेस से विद्रोह कर कांग्रेस जनों ने क्षेत्रीय दलों की स्थापना की जिनमें भारतीय क्रांतिदल, बंगला कांग्रेस, जन कांग्रेस प्रमुख थे फलस्वरूप राज्य स्तर पर गैर– कांग्रेस राजनीतिक दलों ने क्षेत्रीय दलों के रूप में पहचान कायम की। 1969 में कांग्रेस का दो भागों में विभाजन हुआ– संगठन कांग्रेस (पुरानी कांग्रेस जिसके नेता कामराज, मोरारजी देसाई एवं निजलिंगप्पा थे तथा नवीन काग्रेस श्रीमती गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस)।

1971 स्वतंत्र पार्टी, जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी एवं संगठन कांग्रेस द्वारा इंदिरा गांधी को पराजित करने के लिए निर्मित महागठबंधन को सफलता प्राप्त नहीं हुई। 1974 में भारतीय लोकदल का उदय हुआ जिसमें भारतीय क्रांति दल के अलावा स्वतंत्र पार्टी (पीलू मोदी गुट), किसान मजदूर पार्टी (चांदराम) उत्कल कांगेस (बीजू पटनायक), संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (राजनारायण), पंजाब खेतीबाड़ी जमींदारी यूनियन (बाबा महेन्द्र सिंह) जैसे दल शामिल थे।

आपातकाल में 1977 में जनता पार्टी का उदय हुआ जिसमें कांग्रेस के विकल्प के इच्छुक गैर साम्यवादी दल (संगठन कांग्रेस, जनसंघ, भारतीय लोकदल एवं समाजवादी दल शामिल थे)। कांग्रेस से त्याग–पत्र देकर जग जीवगनराम के नेतृत्व में गठित लोकतांत्रिक कांग्रेस ने जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का निश्चय किया। मई 1977 में इन पांचो दलों का विलय जनता पार्टी में हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् केंद्र में कांग्रेस के एकछत्र शासन का पटाक्षेप 1977 में जनता पार्टी की विजय से हुआ। लेकिन जुलाई 1979 में जनता पार्टी का विभाजन हुआ। केन्द्र की गैर कांग्रेस सरकार अल्प अवधि की रही।

1980 में भारतीय जनता पार्टी का गठन किया गया । 80 के दशक के मध्य से ही क्षेत्रीय दलों के महत्व एवं भूमिका मे वृद्धि हुयी। 1984 में बहुजन समाजवादी पार्टी का गठन किया गया। 1984 के लोकसभा चुनावों में तेलगूदेशम जैसे क्षेत्रीय दल लोकसभा में दूसरा सबसे बड़ा दल था।

1987 में कांग्रेस का विकल्प खड़ा करने के लिए चौधरी देवीलाल के प्रयासों से जनता पार्टी, लोकदल, तथा कांग्रेस (इ) छोड़कर वी.पी. सिंह द्वारा गठित जनमोर्चा एवं कांग्रेस एस के विलय से जनता दल का गठन हुआ। जनता दल ने कालान्तर में गैर साम्यवादी विपक्षी दलों के साथ मिलकर 1988 में राष्ट्रीय मोर्चे का गठन किया। इस मोर्चे में जनता दल के साथ क्षेत्रीय दल जैसे द्रमुक, असमगण परिषद, तेलगुदेशम एवं कांग्रेस (एस) शामिल थे। 80 एवं 90 के दशक में अनेक क्षेत्रीय दलों ने प्रमुखता ग्रहण की। इनमें उत्तरप्रदेश में मुलायम सिंह के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजपार्टी, असम गण परिषद्, अकाली दल (लोगोंवाल), अकाली दल (मान), सिक्किम संग्राम परिषद (सिक्किम), तेलगुदेशम (नायडू गुट), हरियाणा विकास पार्टी (हरियाणा), नागा नेशनल कॉफ्रेस (नागालैण्ड), मिजो नेशनल फ्रंट (मिजोरम), पैंथर्स पार्टी (जम्मू एण्ड कश्मीर), झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (शिब्बू सोरेन) आदि क्षेत्रीय दल प्रमुख हैं।

21वीं सदी तक आते–आते और भी राज्य स्तरीय दल उभरे। इन दलों के उभरने से भारतीय राजनीति में जनता के सामने फिर विकल्प बढ़ गये। भारतीय राजनीति में 2001 से लेकर 2014 के मध्य उभरे राजनीतिक दल, उनका क्षेत्र, चुनाव चिह्न, स्थापना वर्ष और नेता का नाम आगे सारणीबद्ध है।

राज्य स्तरीय दल

राज्य	दल का नाम	चुनाव चिन्ह	स्थापना वर्ष	वर्तमान नेता
तेलगाना	तेलगाना राष्ट्र समिति	कार	2001	के.चन्द्रशेखर राव
नागालैंड व मणिपुर	नागा पीपुल्स फ्रंट	मुर्गा	2002	नेफियो राव
असम	आल इंडिया युनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट	ताला व चाबी	2004	बदरूद्दीन अजमत
तमिलनाडु	देशीया मुरपोक्कू द्रविड़ कड़गम	नगाड़ा	2005	विजयराज आलगस्वामी
महराष्ट्र	महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना	रेल्वे इंजन	2006	ठाकरे
झारखंड	झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक)	कंघा	2006	बाबू लाल मरांडी
हरियाणा	हरियाणा जनहित कांग्रेस	ट्रेक्टर	2007	कुलदीप विश्नोई
आंधप्रदेश	युवजन श्रमिक रायतू कांग्रेस पार्टी	पंखा	2009	वाई.एस.जगमोहन रेड्डी
पुडुचेरी	आल इंडिया एन.आर.कांग्रेस	जग	2011	एन. रंगस्वामी
दिल्ली, पंजाब	आम आदमी पार्टी	झाड़ू	2012	अरविंद केजरीवाल
मेघालय	नेशनल पीपुल्स पार्टी	किताब	2013	पी.ए.संगमा
सिक्किम	सिक्किम क्रांतिकारी दल	टेबिल लैंप	2013	भारती शर्मा
बिहार	राष्ट्रीय लोक समता पार्टी	पंखा	2013	उपेंद्र कुशवाहा

निष्कर्ष

भारत में दलीय व्यवस्था के उद्‌भव एवं विकास का अध्ययन करने के पश्चात हम पाते हैं कि अनेक राजनीतिक दलों का उदय प्रारम्भ में विचारधारा के वैभिन्य के आधार पर हुआ। विचारधारा के वैभिन्य के आधार पर अनेक शाखाएँ– प्रशाखाएँ प्रस्फुटित होती चली गई। राजनीतिक दलों में लगातार खण्डित तथा विखण्डित होने की प्रवृति रही है। कोई भी राजनीतिक दल इससे अछूता नहीं है। व्यक्ति विशेष की भावनाओं के आधार पर दल बन जाते हैं। कोई भी महत्वपूर्ण राजनेता ऐसा नहीं है जो दल बदलता न रहा हो। मतदाता का नेताओं और राजनीतिक दलों से विश्वास उठने लगा है। क्षेत्रीय दलों का प्रभाव निरंतर भारतीय राजनीति में बढ़ता जा रहा है। यदि क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय उद्देश्य को लेकर चलें तो यह एक सार्थक प्रवृत्ति है पर वास्तविकता यह है कि इतने विपरीत उद्देश्यों को लेकर ये क्षेत्रीय दल काम कर रहे हैं कि इनका साथ चलना बहुत कठिन है। भारत में राजनीतिक दल विकास के उस चरण तक नहीं पहुँच पाये हैं, जहाँ ठोस तथा दूरगामी सिद्धांतों को जनता के सामने रखा जा सके, ऐसे चुनावी मुद्दे उठाये जा सकें जो मतदाता का विश्वास प्राप्त कर सकें, स्वार्थ से परे सार्वजनिक उद्देश्य के लिए कोई सशक्त कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकें। राजनीतिक दलों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि उनको गिन पाना कठिन हे रहा है। ग्यारहवीं, बारहवीं तथा तेरहवीं लोकसभा के चुनाव राजनीतिक दलों को चेतावनी है कि वे अपनी कार्य पद्धति में परिवर्तन लाये अन्यथा भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था का सार्थक अर्थों में क्रियान्वयन कठिन से कठिनतर होता जायेगा।

सुझाव

भारत में दलीय व्यवस्था में सुधार हेतु कुछ सुझाव तथा कदम प्रशासन द्वारा तुरंत उठाये जाने की आवश्यकता है।

1. राजनीतिक दलों की संख्या को सीमित करना अत्यन्त आवश्यक है। इस संदर्भ में दलों को मान्यता देने के लिये कुछ स्पष्ट मापदण्ड होने चाहिए।
2. चुनाव सुधारों को पूरी निष्ठा से लागू करना आवश्यक है।
3. दल–बदल कानून में संशोधन किया जाना चाहिए, दल बदलने की अनुमति नेताओं को जनता से लेनी चाहिए।
4. चुनाव लड़ने के लिये अधिकतम आयु की भी सीमा निर्धारित की जानी चाहिए तथा शैक्षणिक योग्यताओं का भी निर्धारण किया जाना चाहिए।
5. क्षेत्रीय दलों को अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करनी चाहिए ताकि संघात्मक एवं स्थानीय हितों की आवाज को बुलन्द किया जा सके। अतः यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय एवं राज्य के दल अपनी कार्य पद्धति में परिवर्तन करें तथा परिपक्व एवं जिम्मेदार सहयोगी घटक की भूमिका का निर्वाह करें।
6. इसके साथ यह भी सच है कि संसदीय शासन व्यवस्था में विपक्ष की जिम्मेदार भूमिका भी अपेक्षित है जो केवल विरोध के लिए विरोध, संकीर्ण दृष्टिकोण, स्वेच्छाचारी असहमति एवं सदन की कार्यवाही अनावश्यक रूप से न चलने देने की कुप्रवृतियों से मुक्त हो। विवेकवान सकारात्मक विपक्ष संसदीय लोकतंत्र की सफलता की गारंटी है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति के निर्धारक तत्वों में राजनीतिक रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम भारत के राजनीतिक दल हैं। यह आवश्यक है कि भारत की दलीय व्यवस्था में अन्तर्निहित जटिलताओं का निराकरण किया जाये। साथ ही यह भी अनिवार्य है कि, राजनीतिक दलों द्वारा स्वयं अपनी दशा एवं दिशा का निर्धारण किया जाये। भारत के राजनीतिक दलों के आत्मावलोकन एवं स्वसुधार की इच्छा शक्ति से ही भारत की राजनीतिक दलीय व्यवस्था के अन्तर्निहित जटिलताओं का निराकरण हो सकता है।

अंत टिप्पणी

1. *बर्क, थॉट्स ऑन द कॉसेज ऑफ प्रसेन्ट डिसकन्टेन्ट्स, 1970 पृष्ठ संख्या 16*
2. *मेकाइवर, द वेब ऑफ गवर्नमेंट पृ.स. 122*
3. *हरमन फाइनर, द थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ मॉडर्न गवर्नमेंट, लंदन, 1961 पृ.स. 280*
4. *लीकॉक, एलीमेन्ट्स ऑफ पॉलिटिक्स, पृ.स. 311*

5. रजनी कोठारी, "दी कांग्रेस सिस्टम इन इण्डिया" तथा "पार्टी सिस्टम एण्ड इलेक्शन स्टडीज" ऑकेशनल पेपर्स ऑफ दी सेन्टर फॉर डेवलपिंग सोसाइटीज, नं. 1, एलाइड पब्लिशर्स, बम्बई
6. एस.एम. सईद : भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, लखनऊः सुलभ प्रकाशन, 2001 पृ.स. 232, 234
7. प्रो. विपिन चन्द्र : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय 1998 पृ.स. 29
8. एच.आर. सिंह तथा वीना जैन : भारतीय शासन एवं राजनीति, नई दिल्ली : एस. चन्द एण्ड क.लि. 1976 पृ.स. 394–395
9. अश्विनी कुमार : सम्पादकीय, पंजाब केसरी, 12 अगस्त 2002
10. डॉ. जयप्रकाश शर्मा : भारतीय राजनीतिक व्यवस्था : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, पृ.स. 254
11. इण्डिया टुडे बेमेल गठबंधन 3 सितम्बर 2014
12. डॉ. रूपा मंगलानी : भारतीय शासन एवं राजनीति, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर पृ.स. 451
13. डॉ. बालेन्द्र सिंह : भारतीय राज व्यवस्था में सांझा सरकारें, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.स. 49
14. डॉ. संजय बी. गायकवाड़ एवं प्रो. सुनिल एस. ताकतोड़े, भारतीय शासन एवं राजनीति : रोशनी पब्लिकेशंस, कानपुर पृ.स. 182
15. डॉ. राम सकल सिंह : भारतीय शासन और राजनीति, अर्पण पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ.स. 222
16. डॉ. मीना राठौड : भारत में राजनैतिक दल, आर.बी. एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर पृ.स. 25
17. डॉ. घनश्याम एम. बुटाणी : भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टियाँ, हिन्द प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.स. 19–20
18. विनायक त्रिपाठी, पजंजलि त्रिपाठी : लोकतंत्र और चुनाव सुधार, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.स. 18
19. डॉ. एस.सी. सिंहल : भारतीय शासन एवं राजनीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, पृ.स. 251–52
20. प्रो. धर्मचन्द जैन : भारत में संसदीय राजनीति, आर. बी.एस.ए. पब्लिशर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.स. 207
21. प्रो. धर्मचन्द जैन : भारतीय संसद एक राजनीतिक विश्लेषण, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.स. 2